

पराक पुं. (तत्.) 1. स्मृति ग्रंथों के अनुसार एक प्रकार का व्रत, जिसे 'कृच्छ्रपराक' कहा जाता है। यह प्रमाद मुक्त तथा यतात्मा रहकर चार दिनों से बारह दिनों तक बिना कुछ खाए-पीए किया जाने वाला व्रत है। धर्मशास्त्रों में इसकी चर्चा प्रायश्चित के संदर्भ में मिलती है 2. आयु. एक प्रकार का रोग, बीमारी 3. खड्ग।

पराकरण पुं. (तत्.) 1. अपेक्षा करना 2. दूर करना, परे हटाना 3. अस्वीकृत करना 4. तिरस्कृत करना।

पराकाष्ठा स्त्री. (तत्.) 1. चरम सीमा, अंतिम सीमारेखा 2. किसी कार्य या बात की वह सीमा जिससे आगे जाना संभव न हो 3. गायत्री का एक भेद 4. ब्रह्मा की आधी आयु की संख्या।

पराक्रम पुं. (तत्.) 1. बल, शक्ति, सामर्थ्य, वीरता, साहस 2. अभिमान 3. विष्णु 4. पुरुषार्थ, उद्यम, उद्योग, पौरुष 5. ऐसा गुण जिससे मनुष्य कठिनाइयों को पार करता हुआ आगे बढ़ता है, उत्साह और वीरता के कार्य करता है।

पराक्रमी वि. (तत्.) पराक्रम करने वाला।

पराक्रांत वि. (तत्.) 1. पीछे की ओर मुड़ा हुआ, जिसका मुँह मोड़ दिया गया हो 2. उत्साही, उत्साह भाव से परिपूर्ण, वीर भाव से परिपूर्ण 3. जिस पर दूसरों द्वारा आक्रमण हुआ हो।

पराग पुं. (तत्.) 1. वह धूलकण या रजकण जो फलों के केसरों पर असंख्य मात्रा में जमे होते हैं, पुष्परज 2. धूलि, रज 3. चन्दन 4. कर्पूराज, कपूर का चूर्ण, कपूर के छोटे कण 5. जीव. पराग कोश में कणों के रूप में उत्पन्न होने वाला लघु बीजाणुओं का समुच्चय जिसके अंकुरण से पराग नलिका बनती है जो बीजांड में प्रवेश करती है।

पराग-केसर पुं. (तत्.) फूलों के बीचों बीच उगे हुए लम्बे-पतले सूत जिनकी नोक पर पराग कण होते हैं, इन्हें पौधों का जननेंद्रिय अंग भी कहा जाता है।

परागण पुं. (तद्.) 1. पेड़-पौधों का पराग-युक्त होना 2. जीव. पराग कणों का परागकोश से निकलकर जायांग के वर्तिकाय तक स्थानांतरण। यह कीट, जल, वायु आदि किसी माध्यम से होता है।

परागत वि. (तत्.) घिरा हुआ, आवृत 2. मृत, मरा हुआ 3. विस्तृत, फैला हुआ, व्यापक, आवृत्त 4. दूसरे द्वारा प्रस्तुत।

परागति स्त्री. (तत्.) गायत्री।

परागना अ.क्रि. (तत्.) 1. अनुरक्त होना।

पराचीन वि. (तत्.) 1. पराङ्मुख, अरुचि रखने वाला, उदासीन 2. जो दूसरी ओर स्थित हो 3. बाद में होने वाला।

पराजय स्त्री. (तत्.) हार, असफलता, विलो. विजय, जय।

पराजित वि. (तत्.) परास्त, हारा हुआ, पराभूत।

परात स्त्री. (देश.) थाली के आकार का एक बड़ा बर्तन, जिसके किनारे ऊँचे होते हैं।

परात्पर वि. (तत्.) 1. जो सबसे परे हो, सर्वश्रेष्ठ पुं. परमात्मा, विष्णु।

परात्मा पुं. (तत्.) परमात्मा, परब्रह्म।

पराधि स्त्री. (तत्.) तीव्र मानसिक पीड़ा, व्यथा।

पराधीन वि. (तत्.) परवश, दूसरे के अधीन, परतंत्र, गुलाम।

पराधीनता स्त्री. (तत्.) परतंत्रता, दूसरे की अधीनता, पराधीन होने का भाव, गुलामी।

परान पुं. (तद्.) दे. 'प्राण'।

परापचा पुं. (फा.) 1. कपड़ों के कटपीस से टोपियाँ या छोटे कपड़े बनाकर बेचने वाला 2. सिले-सिलाए कपड़े बेचने वाला।

परापर वि. (तत्.) 1. दे. परात्पर 2. दर्श. जिसमें परत्व और अपरत्व दोनों गुण हों।

पराभव पुं. (तत्.) 1. पराजय, हार 2. तिरस्कार, अनादर 3. विनाश।